सहज राजयोग से सहज परिवर्तन ही ज्वाला स्वरूप योग

ज्वाला भस्म भी करती, तो ज्वाला परिवर्तन भी करती। अग्नि को देखें तो सब किचड़े को भस्म करती है और वही अग्नि परिवर्तन भी करती है। साइंस के साधनों ने भी यह सिद्ध किया है और हम भी देखते हैं, सबसे कॉमन चीज़ जो खाना खाते हैं उसको पकाने का काम कौन करता है, अग्नि ना। आग ही करती है ना। कच्चे को पक्के में बदलना, यह भी आग का ही काम है। जैसे कच्ची ईंट होती है, उसको पक्की बनाने का काम भी आग का ही है। माना कि कच्चे को पक्का करने की परिवर्तन शक्ति आग में है। आध्यात्मिक रीति से अग्नि के ज्वालामुखी रूप को देखें तो उसमें भी भस्म कर परिवर्तन करने की शक्ति है। पुराने पाप कर्म को भस्म कर उसे परिवर्तन कर श्रेष्ठ बनाने की ताकत उसमें है। जब तक ज्वाला स्वरूप की आग न हो, तब तक परिवर्तन होना कठिन है।

राजयोगी ब्र.कु. गंगाधर भाई

हमने बाबा की एक छोटी-सी अवज्ञा की, मान लो कि हमने मुरली मिस की, है तो छोटी बात लेकिन अवज्ञा तो हुई ना! ये छोटा पाप भी बड़ा हो जाता है। क्योंकि जैसे हमें बाबा ने बताया है एक कदम में पदम है। तो एक का पदमगुणा, अंतर है ना! तो प्राप्ति भी इतनी ही है। और कदम में पदम, तो उसके विपरीत अवज्ञा की ओर कदम बढ़ाये तो उसका भी तो उल्टा पदम होगा ना! क्योंकि अवज्ञा किसकी हुई? भगवान की ना! तो भगवान की अवज्ञा को हम साधारण समझें तो वो किसके खाते में जायेगा! उसी तरह मानो हमने साधारण रीति से किसी के सम्बंध में सुना और वो बात हमने भी दूसरों को कह दी। जिसके प्रति कही उसकी गति क्या होगी! वह जब सुनेंगे, इसने हमारे लिए ऐसा कहा। उसने यह कहा। हमने तो साधारण रीति से कहा था, लेकिन थोड़ा-सा, हल्का-सा पाप हो गया ना। किसी की भी ग्लानि कर दी, किसी की इंसल्ट कर दी, किसी को अपशब्द बोल दिये, किसी को बुरी नज़र से देख लिया। गलती हमारी है, हमारी दृष्टि खराब है, तो उसका पाप तो बनेगा ना! और हमारा जो पैरामीटर है तौल का, वो 'एक का पदम' का है। तो ऐसे छोटे-छोटे पाप जाने-अनजाने में हम करते रहते हैं तो उसके कितने पदम का हिसाब हो जाता है! तो परमात्मा ने हमें बताया है, श्रीमत से उल्टे चलना, तो उसका भी तो हिसाब होगा ना! चलो थोड़ी-सी बीमारी आई, बुखार आया, हमने मुरली मिस कर दी। मुरली मिस की, वो तो है ही, लेकिन बुखार उतर जाने के बाद फिर जो सुस्ती आती है, अलबेलापन आता है और फिर हम अवज्ञा करते हैं। ये जो सूक्ष्म में पाप के जर्म्स हैं जो कि हमें बोझिल करते हैं, मन को भारी करते हैं, अवस्था को स्थिर से वंचित करते हैं, एकाग्रता को भंग करते हैं, उससे क्या होता है, कई बार हमारा स्वास्थ्य ठीक होने पर भी मन बाबा में नहीं लगता, योग नहीं लगता, इसका कारण यही है, सूक्ष्म में होने वाली अवज्ञायें। तो बाबा कहते हैं कि ज्वाला स्वरूप माना जो परमात्मा ने हमारे लिए दिनचर्या बनाई है उसमें एक्यूरेट चलने की हिम्मत रखना। उसमें कहीं न कहीं अवज्ञा होती है तो ज्वाला स्वरूप तो नहीं हुए ना! अवज्ञा माना ही हम जिस राह पर हैं उससे अ-जागरुक हैं। तो जो होना चाहिए वो नहीं हो रहा है माना कि परिवर्तन भी नहीं होगा और न ही हल्के हो रहे हैं। पाप भी भस्म नहीं हो रहा और परिवर्तन भी नहीं होता है। तो इसीलिए बाबा कहते हैं, ज्वाला स्वरूप योग होना ज़रूरी है और वर्तमान समय इसी की आवश्यकता है। हम विश्व परिवर्तन करने वाले हैं, वो होगा तब जब हमारे अंदर जो हो रहे छोटे-मोटे सूक्ष्म पाप हैं उसको भस्म करें, परिवर्तन करें और बाबा जो चाहते हैं वो ज्वाला स्वरूप योग जीवन में हो। एक घण्टे बैठेंगे उसके लिए नहीं, बल्कि जीवन में श्रीमत की कसौटी पर चलना ही ज्वाला स्वरूप योग है।

शुद्ध वृत्ति ही हमारी श्रेष्ठ कृत्ति का आधार बनती है...

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

कोई हमारा बहुत सहयोगी है, वह मेरे सामने आयेगा तो मेरी उसके प्रति दृष्टि ऑटोमेटिकली प्यार की जायेगी और उसकी चाल-चलन, सम्बन्ध-सम्पर्क सब अच्छा लगेगा।

कई ऐसे होते हैं जो कोई बड़ा प्रोग्राम करने के बाद थोड़ा थक जाते हैं। मन भी थक जाता है, तन भी थक जाता है तो धन भी खत्म हो जाता है। फिर सोचते हैं कि हमारी पॉवर कम हो गई, सेवा तो की लेकिन पॉवर कम हो गई। क्यों पॉवर कम हो गई? क्योंकि उस समय बुद्धि इतनी बिज़ी थी कि उसमें कर्म कॉन्शियस हो गई। उसमें बाबा की आज्ञाएं भी भूल जाते हैं। फिर सेवा में जब एक-दो में सम्पर्क-सम्बन्ध बढ़ता है तो जो 63जन्मों से बुराई देखने की आदत है, वह फिर इमर्ज हो जाती है। लेकिन बाबा ने कहा है वह देखो ही नहीं। सी नो इविल, टॉक नो इविल... यह स्लोगन याद रखो। हमारी वृत्ति में कभी अशुभ भावना, अशुभ कामना आवे ही नहीं। तो देखो आपकी अवस्था बहुत अच्छी रहेगी।

जैसे चन्द्रमणि दादी, उनकी विशेषता क्या रही? वह न्यारी रहती थी, कितना भी कोई किसी की ग्लानि करके जावे तो भी दादी उसे उसी दृष्टि से नहीं देखेगी। तो देखो कितना सबके दिलों में छाप लगा दी। तो हम सबको भी शरीर तो एक ना एक दिन छोड़ना ही है। हम जायेंगे तो हमारी क्या महिमा करेंगे? ऐसे तैयार हैं? सब कहें वाह! फलानी तो बहुत अच्छी थी, मेरे प्रति तो सदैव प्यार रखा या एक कहेगी बहुत अच्छी और दूसरी कहेगी नहीं मेरे से तो अच्छी नहीं थी। यह सर्टिफिकेट नहीं मिले ना। इसीलिए अपनी वृत्ति को चेक करो। अगर वृत्ति हमारी ठीक है तो बाप समान बनना बहुत सहज है। शिवबाबा के लिए हमेशा महिमा में कहा जाता है- न्यारा और प्यारा। सिर्फ प्यारा नहीं है न्यारा भी इतना है, प्यारा भी इतना है, इसीलिए शिवबाबा सबको प्यारा लगता है। अगर किसको प्यार ज़्यादा करे, किसके प्रति शुभ भावना रखे, किसके प्रति नहीं रखे तो सभी प्यार नहीं करेंगे। लेकिन बाबा विश्व का प्यारा है। क्योंकि न्यारा भी इतना है तो प्यारा भी इतना है। तो हम लोगों का भी इस पर विशेष अटेन्शन हो। किसी के प्रति भी अपनी सब्कॉन्शियस में भी थोड़ा कुछ भरा हुआ न हो।

सेवा तो हमें करनी ही है, सबके सम्बन्ध-सम्पर्क में आना ही है। किनारा नहीं करना है, किनारा हम कर नहीं सकते हैं। ब्रह्मा बाबा को देखो व्यक्त से अव्यक्त बने फिर भी किनारा किया? वतन से भी बाबा हम बच्चों को देखता रहता है, अनुभव कराता रहता है। किनारा किया क्या? तो हम कैसे किनारा कर सकते हैं! तो यही एक प्वाइंट बुद्धि में रखते हुए अपनी वृत्ति को शुद्ध कर लो। अगर वृत्ति हमारी शुभ हो गई तो दृष्टि, सृष्टि, कृति यानी प्रैक्टिकल लाइफ - यह सब ठीक हो जायेंगे। एक-एक को अलग नहीं करो। आज दृष्टि को ठीक करूं, फिर वृत्ति को ठीक करूं, फिर सृष्टि को ठीक करूं... ऐसे एक-एक में इतना समय लगायेंगे तो संगम इसी में बीत जायेगा। इसीलिए एक फाउण्डेशन है वृत्ति। वृत्ति जैसी भी होगी वैसी हमारी दृष्टि होगी। कोई हमारा बहुत सहयोगी है, वह मेरे सामने आयेगा तो मेरी उसके प्रति दृष्टि ऑटोमेटिकली प्यार की जायेगी और उसकी चाल-चलन, सम्बन्ध-सम्पर्क सब अच्छा लगेगा। तो वृत्ति के ऊपर बाबा हम सबका विशेष अटेन्शन खिंचवा रहे हैं। वृत्ति से हम सेवा भी कर सकते हैं, वायुमण्डल बना सकते हैं और अपनी अवस्था भी अच्छी रख सकते हैं। इसमें डबल फायदा है। सेवा की सेवा और साथ-साथ स्व परिवर्तन। तो वृत्ति को शुभ, श्रेष्ठ बनाओ।

महाभारत के युद्ध का समय है, यानी सारे विश्व में लड़ाई है। कोई स्थान नहीं है जहाँ इन्सान बचने का स्थान बना सके। पर ठिकाना अगर बनाना है तो बुद्धि को ठिकाने पर लगाओ। राइट टाइम पर राइट टचिंग आयेगी। यह करना है, यह नहीं करना है क्योंकि बुद्धि का कनेक्शन कल्याणकारी बाप के साथ है। श्रीमत में मनमत मिक्स करने की आदत नहीं है। मनुष्य मत श्रीमत को समझने नहीं देती है, बीच में टीं-टीं करता है। अरे तू सुन तो सही ना - वर्तमान समय भगवान क्या कहता है! सुनने और बन गयी है। कीड़े के संग से इंफेक्शन हो जाता है। कीड़ों की वृद्धि जल्दी होती है, ब्राह्मणों की वृद्धि देर से होती है। ब्राह्मणी वो जो भ्रमरी हो उड़ती भी है और कीड़े को उठा के उसको अपने संग का रंग देकर चेंज कर देती है। अपने से पूछना है मेरी डयूटी क्या है। हर संकल्प में, कर्म में, भूँ-भूँ मुख से कहेंगे तो असर नहीं होगा। संकल्प और कर्म का असर होगा। संकल्प शुद्ध और कल्याण वाला हो, अच्छा हो तो वह संकल्प काम करता है। ऑटोमेटिक वो बदलता है, चेहरा चेंज होता जाता है।

महससूता की शक्ति से अन्दर के कीड़े को समाप्त करें

राजयोगिनी दादी जानकी जी

ग्रहण करने की शक्ति है बुद्धि में। मन शान्त रहे तो बुद्धि स्वीकार करती है। संस्कार बीच में आते हैं पर उसको बुद्धि चुप करा देती है। संस्कारों में देह अभिमान भरा पड़ा है तो बुद्धि यह रियलाइज़ कराती है।

मेरी बुद्धि में मम्मा, बाबा और दीदी के सिवाय और कुछ भी नहीं है। मेरे बड़ों ने जो सिखाया है, उनके जैसा उदाहरण बनना है। जो शिक्षा मिली है उसी अनुसार चलना है। इतना बुद्धि को अच्छी तरह ठिकाने लगाना, यह अपने लिए पुण्य कर्म करना है, इसमें कमाई है बहुत। एक कदम भी हमारा कमाई बिगर न जाये। पदमापदमपति का टाइटल हमारा है। हमारे पास अथाह धन है, पहले गुणों का धन है, ज्ञान का धन है, यह धन कहाँ से आया? समय ने दिया, भगवान ने दिया। समय नहीं गँवाया, हर कदम में पदमों की कमाई जमा की है। कमाई कैसे करो, यह बाप ने सिखाया है। शिवबाबा कहता है ब्रह्मा बाबा के द्वारा इसके कर्म देख फॉलो करो।

स्थिति को अच्छा बनाके रखना- यह हमारी शान है। बिगर पूछे झुटके आवें! अपने को सीधा बैठना सिखाओ। बार-बार अन्दर प्रैक्टिस करो क्योंकि आत्मा देह-अभिमान में इतनी फंस गई है, जैसे कीड़ा

सबसे अच्छा अपना मित्र बनना हो तो रियलाइज़ेशन के महत्व को जानो। एक बार मम्मा से पूछा मैं क्या पुरूषार्थ करूं। तो मम्मा ने कहा महसूसता की शक्ति सदा अच्छी रखना। आपेही मम्मा-बाबा को बताये मेरी यह भूल हुई। मैं भी आप लोगों से पूछती रहती हूँ कि मेरी कोई भूल हो तो मुझे बताओ। मैं सुधारने चाहती हूँ अपने आपको। कभी भी यह नहीं आयेगा कि औरों की गलती है। दूसरों की गलती देखना, अपनी गलती न देखना। कोई रियलाइज़ कराये तो हर्ट हो जाना,(दर्द पड़ना) फिर हर्ट को हील करना - वह क्या पुरूषार्थ करेगा। देह अभिमान वाले को कोई भी इशारा मिलेगा तो दर्द हो जायेगा। अरे, सुनते ही शक्ल चेंज क्यों होती, थैंक्स मानो जो इशारा दिया। इसमें फिर बाबा का प्यार चाहिए। हाथ छोड़ के जाने वाला नहीं चाहिए।

तो एक महसूसता की शक्ति ऐसी हो जो पता चले कि मेरे में अन्दर अब तक कौन-सा कीड़ा बैठा है। काम का कीड़ा महान दुश्मन है। दृष्टि-वृत्ति कभी भी रूहानियत और ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न नहीं बनेंगी। अगर इसमें हम वंचित रह गये तो क्या भाग्य हुआ!

बाबा और बेहद की खुशी हमारा खज़ाना है

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

बाबा ने हम बच्चों को लक्ष्य दिया है कि बच्चे तुम्हें डबल लाइट बनना है। इस स्थिति में न कोई इच्छा रहेगी, न कोई फीलिंग रहेगी, न कोई उदासी रहेगी, न कोई किसी को देखेंगे। जैसे बाबा कहते आँखें खोल कर बैठो। आँखें खोलकर बैठते हैं, देखते बाबा को हैं। ऐसे सदा ही देखते भी कुछ न देखो।

एक तो हमको ड्रामा का ज्ञान है, बाबा ज़िम्मेदार है, बाबा अथॉरिटी है, सेवाएं बाबा की हैं, हम बाबा के हैं, ज्ञान दाता बाबा, वरदान देने वाला बाबा, जब हर बात में बाबा ही बिन्दु है तो हम क्या बिन्दु बनावें। हम सुखदाता की सन्तान सुखदाता हैं, सुख स्वरूप हैं। हमें मास्टर सर्वशक्तिवान बन विघ्न विनाशक बनना है। एक बात आप प्रैक्टिकल करो- सवेरे-सवेरे उठते तीन बातें याद करो, पहले बाबा, फिर मन्मनाभव, फिर अपने को प्रैक्टिकल में इस नशे में ले आओ हम हैं मास्टर सर्वशक्तिवान। मास्टर सर्वशक्तिवान माना ही योगबल द्वारा विघ्नों का विनाश करने वाले। दूसरा, हम हैं बाबा के डबल लाइट बच्चे। बाबा ने कहा लाइट हो गये, याद किया तो लाइट का ताज मिल गया। तो हम हैं डबल लाइट। तीसरा, सदैव सर्व को शुभ भावना-शुभ कामना का वायब्रेशन दो। फिर है मुझे सदा अपार खुशी में झूमते रहना है, कोई शक्ति नहीं जो मेरी खुशी को गायब करे, ये नशा चाहिए। मुझे बाबा मिला इससे बड़ी कोई खुशी नहीं है। खुशी गायब माना बाबा गायब। कोई कहता इसने मेरी खुशी गायब कर दी, माना उसने आपका बाबा गायब कर दिया। रावण ने राम को गाली दी तो क्या राम अपनी शक्ति को भूल गया! बोलने वाले ने बोल दिया, उसको थैंक्स दो। हमें माया को जीतना है या माया से हारना है? हमें सर्व इच्छाओं को पूर्ण करने वाला बाबा मिला, बाकी क्या इच्छा चाहिए! बाबा ने हमें बहुत नशा चढ़ा कर ऊंचा बनाकर रखा है। इसीलिए किसी प्रकार की न उदासी, न चिन्ता, न ममता। बाकी हम क्या हुए? हम हो गये नष्टोमोहा। बाबा और बेहद की खुशी हमारा खज़ाना है। इसी मस्ती में रहते हैं तो मस्त रहते हैं।